B.A
Part III
Paper-8

भाषा और समाज

भाषा और समाज के संबंध पर प्रकाश डालिए।

भाषा एक सामाजिक यथार्थ है इसलिए सामाजिक व्यवहार के संदर्भ में ही इसकी सही व्याख्या संभव है। भाषा ही वह संचार व्यवस्था है जिसके केन्द्र में मनुष्य की पूरी सत्ता आ सिमटी है। मनुष्य के मन और परिवेश के सभी स्तरों पर भाषा ही मध्यस्थता करती है। एक ओर भाषा हमारे संप्रेषण का सशक्त माध्यम है तो इसरी ओर सामाजिक नियंत्रण का सबसे उपकरण भी है। भाषिक आचरण में ही मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न प्रमाणित किया है। मनुष्य के व्यवहारों को समाज का दर्जा दिया है। भाषा ही क्षेत्रिय के विभिन्न जातियों के समाज की पहचान स्थिर करती है।

भाषा और समाज के पारस्परिक संबंधों की व्याख्या समाजशास्त्र के निकष पर होती है और भाषा विज्ञान के संदर्भों में भी। विश्लेषण का आधार चाहे जो हो इतना तय है कि समाज और भाषा दोनों की प्रवृत्ति एक दूसरे से जुड़ी है। भाषा को परिभाषित करनेवाले चिंतकों ने बतलाया है कि भाषा मनुष्य के उच्चारण अवयवों से निकले ध्वनि प्रतीकों की ऐसी व्यवस्था है जिसके माध्यम से किसी समाज के लोग आपस में विचार विनिमय करते हैं। इस तरह भाषा अनिवार्यतः सामाजिक वस्तु है वह समाज में उत्पन्न होती है समाज उसका प्रयोग करता है, सामाजिक प्रयोग के कारण वह विकसित होती है और समाज के नष्ट होने पर स्वयं भी नष्ट हो जाती है

भाषा की सहायता से ही समाज बनता है और समाज ही भाषा को बनाता है। भाषायी समाज ऐसे समाज को कहा जाता है जिसके लोग वैचारिक अभिव्यक्ति और अभिव्यक्ति के ग्रहण के लिए एक ही भाषा के सूत्र से बँधे होते हैं। हिंदी भाषी समाज के लोग अपने विचाराभिव्यक्ति के लिए हिन्दी का प्रयोग करते हैं जबकि फ्रेंच के लोग इसी उद्देश्य से फ्रांसीसी अपनाते हैं।

फ्रांसीसी समाज और हिंदी समाज के बीच विचारों के संप्रेषित अथवा स्वीकार करने की दृष्टि से कोई तालमेल नहीं है। हिंदी और फ्रांसीसी तथा संसार के सौ से अधिक भाषा-परिवारों का अपना अपना भाषायी समाज है। प्रत्येक भाषीक समाज का अपना भाषा संस्कार है अपने भाषिक नियम हैं और अपने संप्रेषण विधान हैं। संस्कार और विधान के ये घटक ही भाषायी समाज का पहचान देते हैं।

समाज के स्तरभेद सांस्कृतिक आर्थिक शैक्षिक और सामाजिक कारणों से निर्धारित होते हैं। समूचे भारत में हिन्दी भाषा का ही प्रचलन है लेकिन सभी लोग एक जैसी हिन्दी नहीं बोलते। दिल्ली में रिक्शा चलानेवाले की हिन्दी और कलम्त में बोझ ढोनेवाले कुलियों की हिंदी एक जैसी नहीं है। मुम्बई और जोधपुर के व्यापारियों की हिन्दी में भारी अंतराल है। विभिन्न स्तर के लोगों की भाषा पर ध्यान देने से यह बात रेखांकित होती है कि हर भाषा सामाजिक दृष्टि से प्रमाणित होती है।

समाज में भाषा के अनेक रूप उपलब्ध हैं। सामाजिक प्रयुक्त के धरातल पर कोई भी भाषा हमेशा एक जैसी नहीं रहती। न्यायालय में जैसे हिन्दी चलती है, ठीक वैसी ही हिन्दी विज्ञापनों के लिए उपयोगी नहीं होती। साहित्यकार जिस हिन्दी का उपयोग करते हैं ठीक वही हिन्दी कार्यालयों या बाजारों में नहीं चलती। किसी भी भाषा का प्रयोग समाज के जितने अधिक क्षेत्रों में होगा, उसमें भिन्नता उतनी ही अधिक होगी। समाज में भाषा चाहे मौखिक रूप में अभिव्यक्त हो अथवा लिखित रूप में, दैनिक व्यवहार की आवश्यक सामाजिक साधन के रूप में भाषा की पहचान होती है।

भाषा और समाज के अंतः संबंधों का मूल आधार सामाजिक व्यवस्था में भाषा की पहचान और अभिव्यक्ति है। परिवार, परिवेश और व्यक्ति के जीनकोपार्जन के कर्म में भाषा अपने को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती है। भाषा और बोली के बीच पार्थक्य की रेखाएँ भी इसी सामाजिक और जातीय गठन के बीच से उभरती हैं। बोली उन सामान्य जनों के बीच व्यवहृत होती है जो आर्थिक-सांस्कृतिक दृष्टि से कमजोर होते हैं। जबकि भाषा हमेशा उन महाजातियों की भाषा होती है जो मानव समाज में सुप्रतिष्ठित और वरेण्य लोगों से जुड़ी होती है। डा० रामविलास शर्मा ने भाषा और समाज में बताया है कि बोली के आधार पर परिभाषित भाषा का विकास होता है परिनिष्ठित भाषा से बोलियाँ उत्पन्न नहीं होतीं।

प्रत्येक भाषा में अपने समाज की पूरी शक्ति और संपूर्णता के साथ साकार करने का कौशल सामुदायिक अथवा जातीय स्तर पर वर्तमान रहता है। मारीशस और फिजी जैसे देशों में गए प्रवासी भारतीयों ने वहाँ की संस्कृति और सामाजिक स्थितियों के अनुरूप अपनी भारतीय भाषा का नवसंस्कार किया। भाषा के हथियार के माध्यम से ही समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया तेज होती है। किसी पराधीन देश में विदेशी भाषा का संक्रमण समूचे समाज की मानसिकता और सामाजिक प्रक्रिया को बदल डालता है। राजनीतिक गुलामी की अपेक्षा भाषिक गुलामी को अधिक खतरनाक बताया गया है। अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश जैसी भाषाओं के विस्तार को इस संदर्भ में देखा जा सकता है।

समाज के पास अपनी अभिव्यक्ति के लिए जितने विचार हैं, उतने ही विचारों के प्रतीक भी हैं। ये प्रतीक ही भाषा के नाम से पहचाने जाते हैं। सामाजिक संपत्ति के रूप में भाषा मानव समाज की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। सामाजिक व्यवहार और चिंतन प्रक्रिया को इंगित करने में भाषा का तरल प्रवाह सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होता है। समूचे समाज से भाषा का रिश्ता है और भाषा समूचे सामाजिक परिवेश की संस्कृति की वाहिका है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भाषा और समाज में अन्योन्याश्रित संबंध है।